

वाधिसखगले म्वासेदसख निम्बनिनपि ॥ आर्यनामादिरि ॥ ४६ ॥ विविधा नास्त
 रुथना ॥ काधनागुगने म्वा न्येहयगो वारि रि ॥ ४७ ॥ सर्वसख दिनाय कारग
 वान्नवला किग ॥ विरुहाननना धीमानुयज्ञ गहसने लिङ्ग ॥ मुरुगानपसाय
 कामेशाचरुयया विन ॥ ४८ ॥ धर्मादि देसनस्यानमह स्यादवयवदिताग नापवि
 पूनागम्यवज्या निमहाव ॥ ४९ ॥ यनमहययाय कायुर असाव लोकि ॥ ५० ॥

गाना

नल्लजाप्रगसिंहाग्निगङ्गा व्याघ्राव अर्के ८४ सार्दश्य तीमने सत्त्वामग्ना संसान
सागत्रा वद्वा संसान केयासेनागद्विषगमाय मे ॥ मय्यनरुन सत्त्वामग्ना मद्दि
महासने ॥ ४२ ॥ वर्मके उगनाथ अग्नीमानु नवली किं ॥ ४३ ॥ वाचमधू जावामि
वज्रपाणिषु बोधामि ॥ ४४ ॥ गुरुगुरुक नाशे रजसि ता रसाग्ना यि नो ॥ ४५ ॥ यमि
धनवसात्यवममाहे लोक सागत्रा ॥ महाकननयाय गारुप इह नरा ॥

४७

दवा ४

धृता ॥ ४६ ॥ दिनादित्यसंकासाय मे ४७ वदनसरा ॥ रासयनि ४८ माता ना स
प्रमानु ज्ञान ॥ ४९ ॥ कर्मयनि ५० या ला को न रासयन यरु गारुसान ॥ नीलाये
प्रकलाद विमारे नारे निमिकु वन ॥ ५१ ॥ गलनरु अर्थय जहं मया दिनक
ने ॥ का काले अरु मं पा फ ना नारय समाकुले ॥ सनलाद वना मानि सत्ता
नरु मय हं सदा ५२ ना जयि आ मय हं सत्ता नी नारय महोर्द्धवा ॥ नन काले नि

ताम

मां लोकं गाय निम निपुं गवा ॥ रुतां रुतिय गोरुतः नन ३ सादन साध्य सातु ॥
कलय निग निरु न निरु यो ॥ रुदं ववन नभव वीरु ॥ नामाव गन कंकु हियत्पू
ना कार्लि नरु ने ॥ दसरु मिश्वरी नाथे वाधिसत्ये मरु डि के ॥ सर्व पा पदु नप
न्य मां गत्यं कार्लि वरु नी ॥ धन धान्य कलं ये व जाला ग्ययु रिवरु नं ॥ आय
न जाला ग्ययु ननं सर्व सत्यरु रवा वरु ॥ लकी शु स्ययु कं ये व सत्यरु रवा

अथ

वरु नं ॥ मेरि मालं म्य सत्यं नारु लीरु यमहा नन ॥ रुवम कंकु गवा नरु र सन
वला किरु ॥ वावला किरु अ ४ स वी मे वावरु नन यादु मादु किने क नमरु
स्ययु गुरु अम लिने ॥ नम वावरु म हा या रु ३ साध्य साध्य म हा गय ॥ नाना
गुन मा हा ग मा सर्व सत्ये व वल न ॥ जानितं रु वरु नु मा सत्य के स्यरु न
अ ना ॥ सर्व वाधिवि निरु क सत्य नम यो नु मा निता धा अ का नमरु

ताज

निदम्नायानिमिसखावति॥ननिहंसंयवक्रामिदवसंया॥मस्रथम॥
जूनमादधममहाविषयधमनिदमा॥॥उंलावनसमाननमानतामा
इवसर्वतलनूकंपिनि॥सर्वतलनानिदयासरुमुकुरुसरुमुनद॥उंनमा
सगवत्वजवलाकयशमासर्वतलानाकुरुहंरुदत्याहा॥उंनानुलननुन
त्याहा॥मुद्विमुद्विसगतात्मकमेतिहृदयनिर्मला॥माममामनूयिनिम

4

४२

हाप्राभयवतलरुपिन॥जयमाकिनामहाजीतिविश्वनूयिमहावत
कल्याननिमहादेवालाकधारीमहाकसा॥सममिदिसानोद्विपुला
आवर्द्धिवर्द्धना॥उंधुनिदयविदात्याहा॥उंकोलाकामनूयिनि॥सर्व
सर्वतिनायकामंशमाकावमीयदाभयहापानमिनादवीआर्यमाना
ममानमा॥इति॥संखि॥नीप॥विद्यानाहा॥विर्यं॥वदा॥नडानना

गाय

म हा रो नी जू कि ता पी न वा स या ॥ म हां मा ता मा हा अ हा म हा व न य
जा कु मा ॥ म हा ओ डा म हा व अ ह ह स त्व नि स र नी ॥ ए म ना अ न न पा व
ति ह या क न न ए ता ॥ वि दू ता नी ध डी ख जी व ऊ वा पी घ ना यू आ ह
रु ती लं रु नी का ली का ल गो डी नि सा व नी ॥ न हू थी मा ही नी आ का का
ना नी डा मि नि गु ला ॥ डा क नि व द मा मा व गु हा व गु ह वा सि नि ॥ मां म रं

१०

ओ क नी सो म्यां का न वे दा म ना न मा ॥ का पा ले नी म हा व म म स्था म लो य न हि
ना ॥ सा र्थ वा हा रु पा हू ये न ख ता र्ग पु द म नी ॥ व न द ता स नि म म्मी रि न य
मि न वि कु मा ॥ अ व नि या मि नी मि डी न भू ले ज म ना धू वा ॥ ध न्या प ना
म हा हा म गुरु म्म पि य द म ना ॥ क मा न का स नी ही ना उ व उ ग म हा न या ॥
ज ग दे क हि ना य का स न म्म ह कि व ल ना ॥ वा गी ध नी मि त्रा मु का नि सा व

नाम

सर्वप्रमाणम् ॥ सर्वार्थसाधनीरुद्राभापि धादिधनददा ॥ अरु यावे गोम
भायुं न्युत्तमं लोकं धनं लभेत् ॥ नाना नामगुणानां नाना सर्वासाय दिव्यया ॥
उं नाने क्रियानं वेने खातु क्रियया निष स्वाहा ॥ नामा धारुन अने ये धन
कीर्तिन हिन वासि निज रु स्य मरु रु न गुप्ते द वाना म पिह हलं ॥ मोला
गरु गवक ननं सर्व कि स्त्रिष नासनं ॥ सर्व धा धियु समनं सर्व सत्य सखा

वहं ॥ प्रिकाययथ धीमान् गुर्विलानसमादिनो ॥ इत्यनेनेव का लने न
इति या म वायु याह ॥ इत्यनेन सखा निर्यं द प्रिडा धन वा न रुच्य ॥ न
अरु वल रु धाह म धा विव न सं मय ॥ दधना म य न वं डा व्यय हा नी रु या
रु वरु ॥ मनु वी नि तु ता या नि मृ गी न धा पि डि डि ॥ स गु म न व न इ
न ना ता रु य स म कि ने ॥ सान म दे व ता ना नि स दे र पा न्य वा रु ना ना

गाना

का नमस्तु वनि प्रीति दिव्यं नंद ॥ मानव्यमहं लंका नमस्तु वनि
महानम ॥ यं चिदंश यन्महानमस्तु वनि ॥ तदिदं का न
मायुषां नृपि या वल न नम ॥ देवानां गता अयं का ॥ मन्त्रवर्कित
यनना ॥ पिसावा नां सीरुता मा नमो नृप ॥ अकि न्या का न
का ॥ पुनस्तु दोमा दाम हागु हा ॥ अयायस्तु नका ॥ एव वं नका ॥

हुकादय ॥ वेना न विचकायथा यं नंद वनसा ॥ अया मन्त्रि न
न ॥ चक किं पन नस्तु विगुहा ॥ इ वस्तु नवा धने या धया नां नम
च ॥ देवास्तु जापि संगुमः सनूरु वमह ॥ चिके लाग सायु नंद ॥ पुनं
कुचवध ॥ जाति सा नीला वही मा न नक नीति विपद मन ॥ वी निस
नि मा स वा मि न व सा लु वि सा नद ॥ कल्या न नी मि उ सं स वि वाधि

